16 बूढ़ी पृथ्वी का दुख

क्या तुमने कभी सुना है
सपनों में चमकती कुल्हाड़ियों के भय से
पेड़ों की चीत्कार?

कुल्हाड़ियों के वार सहते
किसी पेड़ की हिलती टहनियों में
दिखाई पड़े हैं तुम्हें
बचाव के लिए पुकारते हजारों-हजार हाथ?

क्या होती है, तुम्हारे भीतर धमस
कटकर गिरता है जब कोई पेड़ धरती पर?

सुना है कभी
रात के सन्नाटे में अँधेरे से मुँह ढाँप
किस कदर रोती हैं नदियाँ?

इस घाट अपने कपड़े और मवेशियाँ धोते
सोचा है कभी कि उस घाट
पी रहा होगा कोई प्यासा पानी
या कोई स्त्री चढ़ा रही होगी किसी देवता को अर्घ्य?

कभी महसूस किया कि किस कदर दहलता है
मौन समाधि लिये बैठा पहाड़ का सीना
विस्फोट से टूटकर जब छिटकता दूर तक कोई पत्थर?
सुनाई पड़ी है कभी भरी दुपहरिया में
हथौड़ों की चोट से टूटकर बिखरते पत्थरों की चीख?

खून की उल्टियाँ करते
देखा है कभी हवा को, अपने घर के पिछवाड़े?

थोड़ा-सा वक्त चुराकर बतियाया है कभी
कभी शिकायत न करनेवाली
गुमसुम बूढ़ी पृथ्वी से उसका दुख?

अगर नहीं, तो क्षमा करना!
मुझे तुम्हारे आदमी होने पर सन्देह है!!

-निर्मला पुतुल

शब्दार्थ

महसूस- अनुभव **चीत्कार**-चीख-पुकार, चिल्लाहट **वार**-प्रहार **धमस**-थकान **मसला**-समस्या

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. **निम्नलिखित पंक्तियों के अर्थ स्पष्ट कीजिए-**

   (क) इस घाट अपने कपड़े और मवेशियाँ धोते
   सोचा है कभी कि उस घाट
   पी रहा होगा कोई प्यासा पानी
   या कोई स्त्री चढ़ा रही होगी। किसी देवता को अर्घ्य?

   (ख) अगर नहीं तो क्षमा करना!
   मुझे तुम्हारे आदमी होने पर संदेह है!!

2. नदियों के रोने से क्या तात्पर्य है?

पाठ से आगे

1. पृथ्वी को बूढ़ी क्यों कहा गया है?
2. पेड़ का कटकर गिरना एवं पेड़ का टूटकर गिरना में क्या अंतर है?
3. पृथ्वी को प्रदूषण से बचाने हेतु आप क्या कर सकते हैं?